अर्थालंकार के प्रकार

नाम - डॉ० अंजु
वैशाली महिला महाविद्यालय
विषय - हिन्दी

(11) **असंगति अलंकार** → जब कारण और कार्य में संगति न हो होती तहाँ असंगति अलंकार होता है। जैसे —

हृदय घाव मेरे पीर रघुबीरै

इस पंक्ति में हम देखते हैं कि घाव तो लक्ष्मण के हृदय में है, पर पीड़ा राम को है। अतः यहाँ असंगति अलंकार है।

(12) **विरोधाभास अलंकार** → अर्थालंकारों में विरोधाभास अलंकार भी प्रमुख है। विरोधाभास अलंकार के अंतर्गत एक ही वाक्य में आपस में कटाक्ष करते हुए दो या दो से अधिक भावों का प्रयोग किया जाता है।

उदाहरण के लिए → "मोहब्बत एक मीठा जहर है"

इस वाक्य में जहर को मीठा बताया गया है जबकि ये ज्ञातव्य है कि जहर मीठा नहीं होता। अतः यहाँ

Scanned with CamScanner

पर विरोधाभास अलंकार है।

(13) काव्यलिंग अलंकार → हेतु का वाक्यार्थ अथवा पदार्थ रूप में कथन करना ही काव्यलिंग अलंकार है। कवि जहाँ पर किसी युक्ति से समर्थित की गयी बात को काव्यलिंग अलंकार कहते हैं। अतः हम कहते हैं कि जहाँ पर किसी बात के समर्थन में कोई न कोई युक्ति या कारण जरूर दिया जाता है उसे काव्यलिंग अलंकार कहते हैं।

उदाहरण →

कनक कनक ते सौ गुनी, मादकता अधिकाय।
उहि खाय बौरात नर, इहि पाए बौराय।

(14) समासोक्ति अलंकार → समासोक्ति एक प्रकार का अर्थालंकार है जिसमें समान कार्य, समान लिंग और समान विशेषण आदि के द्वारा किसी प्रस्तुत वर्णन से अप्रस्तुत का ज्ञान होता है।

उदाहरण → कुमुदिनि हू प्रफुलित भई
साँझ कलानिधि जोय।

इस पंक्ति में प्रस्तुत 'कुमुदिनी' से नायिका का और 'कलानिधि' से नायक का ज्ञान होता है।

Scanned with CamScanner

(15) अप्रस्तुत प्रशंसा :- वह अलंकार जिसमें कोई उद्देश्य सिद्ध करने या किसी की प्रशंसा आदि करने के लिए प्रस्तुत की चर्चा न करके अप्रस्तुत की चर्चा की जाती है और उसी से प्रस्तुत का ज्ञान कराया जाता है।

जैसे → 'उसके मुख के सामने चंद्रमा पानी भरता है।'

यह कहना है कि कमलों से कोमलता, चंद्रमा से प्रकाश, सोने से रंग और अमृत से माधुर्य लेकर यह मुख बनाया गया है।

समाप्त

Scanned with CamScanner